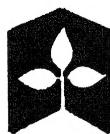
लकड़हारे का बेटा

प्रभा नारायण

लकड़हारे का बेटा

लेखिका
प्रभा नारायण

चित्रांकन
स्वप्नेश चौधरी



साक्षी प्रकाशन
एस-16, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

''राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान
कोलकाता के सौजन्य से''

प्रथम संस्करण : 2002

ISBN-81-86265-67-8

मूल्य : रु. 40.00

प्रकाशक : **साक्षी प्रकाशन**
एस-16, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
फोन : 011-2284833

पृष्ठ-सज्जा एवं
टाइप-सैटिंग : निधि लेज़र प्वाइंट,
शाहदरा, दिल्ली-110 032

LAKARHARE KA BETA *by* Prabha Narayan

Price : Rs. 40.00

अनुक्रम

प्रकाशकीय

लोककथा साहित्य के रूप में जातियों का इतिहास सुरक्षित है। अनेक दृष्टि से मानव मात्र के लिए ये उपयोगी हैं। इनमें नैतिक शिक्षा, साहस, बलिदान तथा जातीय अभिमान से जुड़े जीवन के दर्शन सहज रूप में होते हैं।

श्रीमती प्रभानारायण का नाम हिन्दी लोककथा लेखन में जाना-पहचाना नाम है। लोककथाओं के पुनर्लेखन को इन्होंने बहुत ही सरल और रोचक भाषा में प्रस्तुत किया है। सभी आयु-वर्ग के पाठक इनकी रचनाओं का समान रूप से आस्वादन करते रहे हैं। हमारे प्रकाशन से प्रकाशित इनकी पूर्व पुस्तक **चूं चूं की परदेस यात्रा** पाठकों द्वारा बहुत अधिक प्रशंसित रही है। **लकड़हारे का बेटा** इनकी नवीन कृति है। इसे प्रकाशित कर हम गर्व का अनुभव कर रहे हैं।

इस पुस्तक की कहानियों का चित्रांकन सुप्रसिद्ध चित्रकार स्वप्नेश चौधरी ने किया हैं। इससे पुस्तक और भी अधिक आकर्षक बन पड़ी है। हमारा प्रयास सदैव ही स्तरीय साहित्य को पाठकों तक पहुँचाने का रहा है। साथ ही पाठकों का सहयोग भी हमें निरंतर मिलता रहा है, जिसके हम आभारी हैं। इस पुस्तक के बारे में पाठकों के विचारों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

हनुमान

मदन जब गांव के निकट पहुंचा तो रास्ते में उसने एक मूर्ति को प्रणाम किया। वह मूर्ति एक छोटे चौतरे पर स्थापित थी। कुछ देर घुटने टेक कर ध्यान में रहा, फिर उठ कर चलने को हुआ। रास्ते में भोला ने पूछा, 'मदन यह किस देवता का चौरा है?

मदन ने कहा, 'हां। देवता ही समझो।'

भोला को जिज्ञासा हुई, उसने कहा, 'देवता ही समझो के क्या माने?'

तब मदन ने कहा, 'मैं बताता हूं, जब तुम पूरी बात सुन लोगे तो स्वयं ही समझ जाओगे।'

—कुछ समय पहले की बात है। एक बंदर था एक बंदरिया थी। दोनों ने जोड़ा बनाया और एक पेड़ पर अपना घर बसाया। काफी दिन बीत जाने पर भी बंदरिया को बच्चा नहीं हुआ, तो वह दोनों रोज महादेव के मंदिर जाते, बहुत देर तक मंदिर की परिक्रमा करते और वहां गिरा हुआ फूल या प्रसाद लेकर ही लौटते।

एक दिन बंदरिया ने सपना देखा कि महादेव और पार्वती आये हुए हैं, और एक सेब देकर आशीर्वाद देते हुए चले गये। बंदरिया जब जगी तो उसने देखा कि सचमुच एक लाल सेब रखा है। उसने उस सेब को माथे से लगाया और खा गई। बंदरिया को उसके सपने का आशीर्वाद फलीभूत हुआ। समय पर उसने एक अद्‌भुत बच्चे को जन्म दिया, जिसका मुंह तो बन्दरों जैसा था, पर हाथ-पैर आदमी जैसे थे।

पहले तो बंदरिया दम्पत्ति बच्चे को देखकर घबड़ाये। बंदरिया बच्चे को आश्चर्य से देखती रही। वह उसे दूध पिलाना भी भूल गई। पर धीरे-धीरे उसकी ममता जागी और उसने प्यार से बच्चे को छाती से लगा लिया। उसके लिए तो वह बंजर धरती का फूल था। बंदरिया ने मन ही मन महादेव-पार्वती को नमस्कार किया और बच्चे के दीर्घ जीवन की कामना की। बंदर का वह बच्चा दिन दूना और रात चौगुना बढ़ने लगा। ताकत उसके बदन में इतनी थी कि पल में वह इस पेड़ से उस पेड़ पर कूद कर चला जाता। पहाड़ी नदी को तैर कर पार कर लेता। जंगल से फलों की बड़ी-बड़ी डालें तोड़ ले आता। गांव के लोग उसे हनुमान के नाम से पुकारने लगे। गांव के सभी लोगों की ममता उस पर हो गई थी, सब उसे प्यार भी करने लगे। जब तक वे लोग हनुमान को दिन में एक बार देख नहीं लेते, उन्हें चैन नहीं आती।

हनुमान कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाता था। बच्चे तो उसे परम मित्र समझने लगे। जब वह फलों से लदे डाल तोड़ कर लाता, सभी बच्चे जुट कर खाते। हनुमान चुपचाप बैठकर खुद भी खाता रहता।

एक दिन की बात है। एक बच्चा तालाब में नहा रहा था। वह डूबने लगा। सभी बच्चे शोर मचाने लगे, तो हनुमान तालाब में कूद गया और बच्चे को निकाल लाया। उस दिन से तो हनुमान उनका सगा हो गया।

बंदर-बंदरिया अपने बच्चे को देख सुखी तो होते थे, पर उसकी असाधारण बातों को देख उन्हें



बराबर भय भी लगा रहता था कि यह कोई पुण्य आत्मा तो नहीं जो श्राप-वश इस रूप में हमारे पास आ गई है। कहीं यह हमें छोड़कर चला तो नहीं जाएगा? यह सोच कर बंदरिया व्याकुल हो जाती। जब हनुमान बाहर जाता तो सारे दिन चिंतित होकर इंतजार करती रहती।

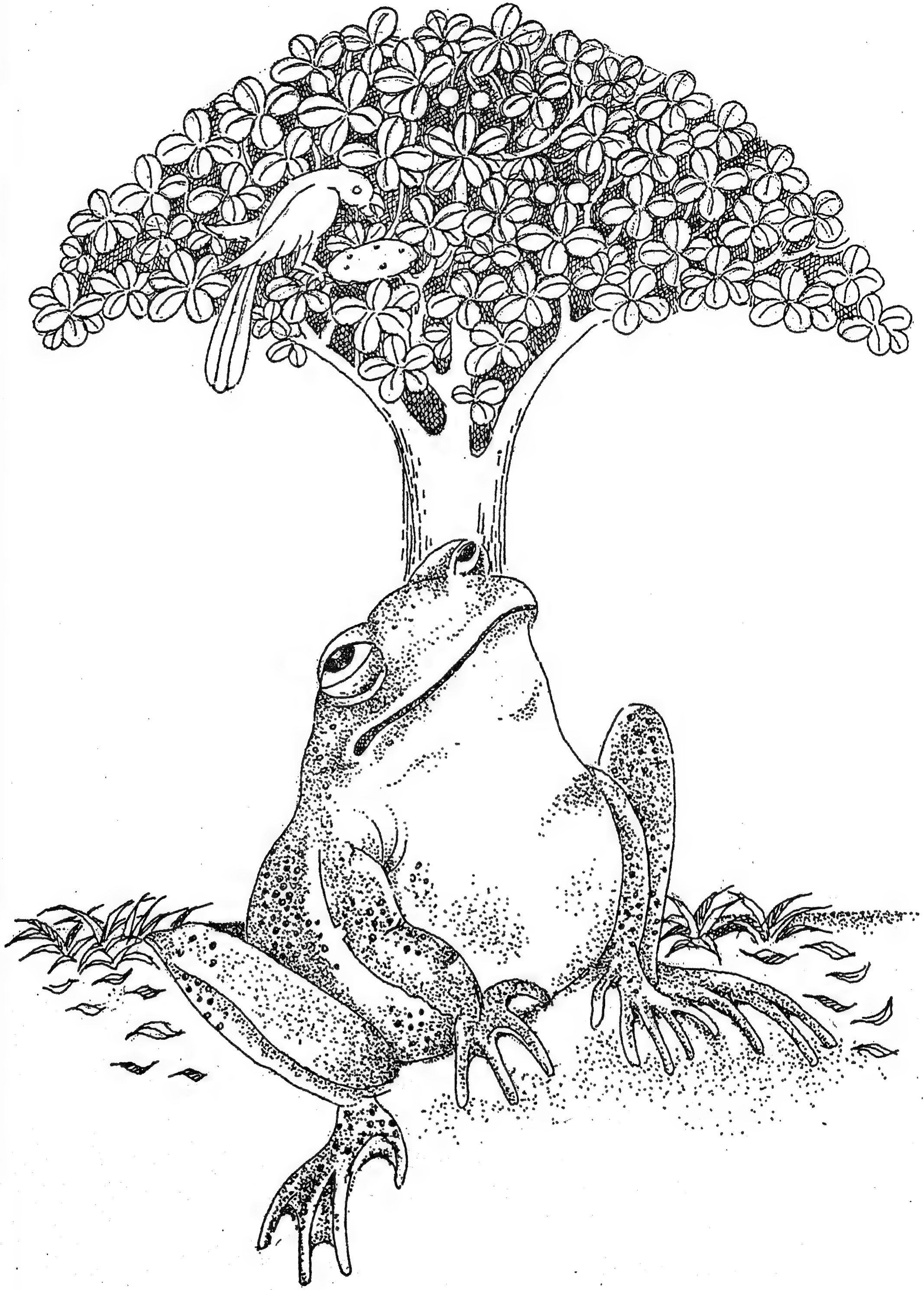
एक दिन बंदरिया का शक सच में बदल गया। हनुमान बाहर गया तो लौट कर नहीं आया। पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। बच्चे रो-रो कर बेहाल हो गये, कि हनुमान कहां चला गया। धीरे-धीरे सब शान्त होने लगे। पर मां बंदरिया उसी पेड़ पर बैठी राह देखती रहती। इस प्रकार पूरा एक साल बीत गया।

बात यह थी कि हनुमान जिस जंगल में गया था, वहां उस समय शिकारियों का एक झुंड आया हुआ था। चिड़िया का शिकार करते समय, एक गोली हनुमान के पैर में लग गई। वह पेड़ से नीचे गिर गया। शिकारियों को बहुत अफसोस हुआ। बेहोश हनुमान को गाड़ी में डाल कर शिकारी लड़के उसे अपने साथ ले गये। खून बह जाने से हनुमान अशक्त हो गया था। उन्होंने उसके पैर की गोली निकलवाई और उसका इलाज किया। हनुमान ठीक हो गया।

जिस समय उसका इलाज चल रहा था, उस समय बनर्जी नाम का एक डाक्टर वहां था, जो जानवरों पर रिसर्च कर रहा था, कि कुछ जानवरों में बुद्धि की कमी नहीं होती, पर ये बोल नहीं सकते, क्यों? उस डा. की नजर हनुमान पर जब पड़ी, तो उसे ऐसा लगा, कि इसका शरीर आदमी की तरह है, मुंह बंदर की तरह, पर हरकत सब इन्सानों की तरह है। डाक्टर ने उन शिकारी लड़कों को काफी पैसा देकर हनुमान को ले लिया। हनुमान पैर से लाचार था इस कारण चल फिर नहीं सकता था। डाक्टर बनर्जी ने कई तरह के टेस्ट किये, फिर हनुमान के गले का आपरेशन किया। तीन बार आपरेशन के बाद, डाक्टर को थोड़ी आशा बंधी, पर कोई फर्क नहीं पड़ा। हनुमान उस समय आदमियों के बीच रहने लगा था। डाक्टर ने कुछ दवाएं देनी शुरू की। कुछ दिन के बाद वह आदमियों जैसी आवाज निकालने की कोशिश करने लगा। जिस समय दवा का कोर्स खतम हुआ हनुमान ने कहा, "बाबा अपने घर जाऊंगा।" इस प्रकार एक साल के इलाज के बाद डाक्टर को सफलता मिल गई। डाक्टर की खुशी का ठिकाना नहीं था। डाक्टर ने पता करवाया कि उसे कहां से लाया गया था। मालूम होने पर वह हनुमान को लेकर गया। गांव वाले सब दौड़ कर आ गये, हनुमान को गले लगाने लगे, तभी हनुमान बोला, "मेरी मां कहां है?" लोग जल्दी से उसे उसी पेड़ के पास ले गये। बंदर-बंदरिया सूख कर काटा हो गये थे, हनुमान दौड़ कर पेड़ पर चढ़ गया, बंदरिया रोने लगी।

हनुमान बोला, "मैं तुमको छोड़ कर नहीं जाऊंगा। डाक्टर ने उसके लिए, एक छोटा सा कमरा बनवा दिया। हनुमान अपने मां-बाप को लेकर उसी में रहने लगा। कालान्तर में बंदर-बंदरिया दोनों मर गये, पर हनुमान गांव छोड़ कर कहीं नहीं गया। वह गांव में सभी की मदद करता। खेतों में काम करता। हर दिन गांव के एक आदमी के घर उसकी दावत रहती। सब लोग यही समझते थे कि यह सचमुच में हनुमान का अवतार है, वैसी ही श्रद्धा भी रखते थे। वह गांव आज भी सुखी-सम्पन्न है। हालांकि हनुमान अब नहीं रहा पर उसकी स्मृति में, एक सुन्दर चौतरा बना हुआ है, जिसे हनुमान का चौरा कहते हैं। यहां लोग अभी भी श्रद्धा से माथा टेकते और मनौती मानते हैं। उनकी मनौती पूरी भी हो जाती है।

प्रेम, श्रद्धा और विश्वास यह मानव के गुण हैं, जो सबको आपस में बांध लेते हैं। इतना कह कर मदन चुप हो गया। उसने हनुमान के 'चौरा' को झुक कर श्रद्धा से प्रणाम किया।



दुष्ट मित्र

पहले जमाने में, जब खेल-कूद के नये-नये तरीके नहीं थे, उस समय बच्चों के मनोरंजन के लिए बड़े-बुजुर्ग कहानियां सुनाते थे। उसी से बच्चों का मनोरंजन तो होता ही था, साथ शिक्षा भी मिलती थी। उन कहानियों में चिड़िया बोलती है, हाथी-घोड़े बात करते हैं, मछलियां रात में मानव का रूप धर लेती हैं, सांप राजकुमार बन जाते हैं। तब बच्चे बड़े मनोयोग से इन कहानियों को सुनते थे, क्योंकि उन्होंने कभी चिड़िया को बोलते नहीं देखा, जानवरों को बातें करते नहीं सुना। तब उन्हें यह रोचक घटनाएं आश्चर्यचकित कर देती थीं, और वे जुटकर दादी से रोज-रोज नई कहानियों की फर्माइश करते थे। एक दिन श्याम ने अपनी दादी से कहा—"दादी मुझे ऐसी कहानी सुनाओ, जिसमें तोता किसी जानवर से बातें करता हो।"

दादी ने कहा—अच्छा सुनो! एक था तोता और एक था मेढ़क। दोनों में गहरी दोस्ती थी। दोनों एक दूसरे की नींद सोते और जागते थे। ऐसी दोस्ती को दांत-काटी रोटी कहते हैं। दोनों ही एक दूसरे को बहुत चाहते थे। तोता खुले आसमान में उड़ने वाला और मेढ़क पानी में डुबकी लगाने वाला। बहरहाल दोस्ती बहुत गाढ़ी थी।

तोता अमरूद के एक घने पेड़ पर रहता था। बागीचा मधुर फल से लदा रहता था। उसी पेड़ के पास एक कुआं था, जिसमें मेढ़क रहता था। एक दिन की बात है, एक मुसाफिर उस बागीचे में आया, उसे वहां दोपहरी बितानी थी। उसने इधर-उधर देखा, फिर उसी अमरूद के पेड़ के नीचे अपना डेरा जमाया। थोड़ा विश्राम करने के बाद, उसने लकड़ी तोड़ कर आग जलाई, फिर कुएं से पानी लेकर आटा गूंधा। उसने मोटी-मोटी रोटियां बनाईं, पास में अचार था, उससे रोटी खाईं और लेट गया। एक रोटी बच गई, सो उसने पक्षियों के लिए, वहीं डाल दी। तोते को रोटी की सोंधी सुगंध लगी, तो उसने चारों तरफ देखा, जैसे रोटी पर नजर पड़ी, झट से उठाकर पेड़ पर बैठ गया। कुछ देर बाद मुसाफिर अपना सामान समेटकर चल दिया। मेढ़क कुएं से निकला। तोता मेढ़क को "बेंग" कहता था। तोते ने मेढ़क से पूछा—"बेंग रोटी खाएगा?"

मेढ़क बोला— "देबा तो लेब, ना तो
टुकुर-टुकुर ताकब।"

तोता ने आधी रोटी मेढ़क को दे दी। मेढ़क उस आधी रोटी को तुरन्त खा गया। फिर ललचाई आंखों से तोते को देखने लगा।

तोते ने पूछा—
"अउर लेबा बेंग!"

मेढ़क बोला— "देबा तो लेब, ना तो
टुकर-टुकुर ताकब।"

तोते ने उसे फिर थोड़ी रोटी दे दी। इस प्रकार मेढ़क धीरे-धीरे सब रोटी खा गया। तब तोते ने गुस्से से कहा—"रोटी तो अब नहीं है, हमको ही खा लो।"

बस फिर क्या था, मेढ़क ने तोते को भी खा लिया।

अब मेढ़क आगे चला तो एक कुएं पर पनिहारिन पानी भर रही थी।

मेढ़क बोला, "मुझे पानी पिला दो।" पनिहारिन, उसे देख कर हंसने लगी। बोली—"बाबा रे!

यह मेढ़क कैसा है?"

मेढ़क बोला—"हमको देख कर हंसती हो, तो सुनो—

"सवा सेर का लिट्ट खायो,
सुग्गा जैसा मीत खायो,
तुमको खाते का देरी लागी?"

बस मेढ़क बाल्टी-रस्सी समेत पनिहारिन को खा गया। फिर धीरे-धीरे आगे चला। सामने से राजा की बारात आ रही थी।

मेढ़क बोला—"मुझे भी हाथी पर चढ़ाओ!"

सभी देख कर हंसने लगे, और बोले देखो तो, यह मेढ़क बोल रहा है, भला यह हाथी पर कैसे चढ़ेगा। हाथी के पैर से दब जाए, तो छुट्टी हो जाएगी।

मेढ़क गुस्से से बोला—"तो सुनो—

सवा सेर का लिट्ट खायो,
सुग्गा जैसा मीत खायो,
पानी की पनिहारिन खायो,
तुमको खाते का देरी लागी?"

बस सारी बारात, हाथी-घोड़े सब को खा गया। उसका पेट बहुत फूल गया था। सरक-सरक कर चल रहा था, तभी उसने देखा, कुछ लड़के गुल्ली डंडा खेल रहे थे।

मेढ़क बोला मुझे भी गुल्ली डंडा खेलाओ। बच्चों ने जब देखा, तो ताली पीट-पीट कर हंसने लगे। सब शोर मचाने लगे, अरे इस मेढ़क को देखो, यह तो किसी दूसरी दुनिया का लगता है, इसका पेट कितना फूला है?

मेढ़क बोला—मुझे भी खेलना है। लड़के फिर हंसने लगे।

मेढ़क गुस्से से बोला, "सुनो—

सवा सेर का लिट्ट खायो,
सुग्गा जैसा मीत खायो,
पानी की पनिहारिन खायो,
राजा की बारात खायो,
तुमको खाते का देरी लागी?"

लड़कों ने कहा "बार रे, यह तो भयंकर है, हम लोगों को भी खा जाएगा। एक लड़के ने गुल्ली पर डंडा मारा, तो गुल्ली उछल कर मेढ़क पेट में लगी, लगते ही मेढ़क का पेट फट गया, पेट फटते ही तोता रोटी के साथ निकल आया, पनिहारिन अपनी रस्सी, बाल्टी के साथ निकल आई। राजा की बारात हाथी-घोड़े सहित निकल आई। लड़के खुशी से नाचने लगे।

देखा बच्चो! दुष्ट लोगों का यही नतीजा होता है।

जैसे को तैसा

बहुत पहले की बात है। उस जमाने में लोग बहुत सीधे और सच्चे होते थे। छोटे-बड़े जानवर भी सब आपस में दोस्त बन कर रहते थे। उस समय लोगों की जिन्दगी बहुत अमन-चैन से बीतती थी। चोरी तथा लूटपाट का डर नहीं था। कोई मुशाफिर कहीं भी आ-जा सकता था। सब एक दूसरे पर विश्वास और भरोसा करते थे। इस कारण किसी का कोई काम बाकी नहीं रहता था। यदि किसी को असुविधा हुई तो दूसरे लोग मिल कर काम पूरा करवा देते थे।

जानवरों के चरने के लिए चरागाहें थीं। वे आजादी से चरते थे। पर खेतों में तरह-तरह की फसलें देख कर किसी-किसी का मन ललच जाता था। यह उस समय की बात है, जब खेतों में फूट लगी थी। एक सियार का मन फूट देख ललचाया। वह अपने को नहीं रोक सका। पर लाचार था, क्योंकि वह खेत नदी के उस पार था, और सियार को तैरना नहीं आता था। वह अपने मन को किसी तरह काबू में किये हुए था, पर जब फूट पकने लगे तब उसकी सुंगध चारों ओर फैलने लगी, फिर तो सियार की लार टपकने लगी और मन बेकाबू होने लगा। उसने बहुत सोचा कि किसी की मदद ले पर उसे कोई नजर नहीं आया। तभी एक दिन अचानक उसके दिमाग में अपने दोस्त ऊंट की याद आई। उसने सोचा कि ऊंट तो बड़ा जानवर है, वह नदी को आसानी से पार कर सकता है। यह सोच कर वह ऊंट के पास गया। पहले इधर-उधर की बातें करता रहा, फिर उसने कहा—"ऊंट भाई आजकल फूट की सुंगध जोरों से आ रही है, अगर खाने को मिलता तो बड़ा मजा आता।"

ऊंट ने कहा—"सियार भाई नदी तो भरी हुई है, पहले तो उसे पार करना ही कठिन है। अगर पार भी कर लिया, तो खेत की रखवाली करने वाला घुसने नहीं देगा।"

सियार ने कहा—"जिस दिन नदी का पानी कुछ कम हो, उस दिन हम कोशिश करें, अगर पार हो गये तो रात में मौका देखकर खेत में घुसेंगे।"

ऊंट भी फूट खाने की लालच में आ गया। उसने कहा, "ठीक है जिस दिन नदी का पानी कुछ कम होगा, मैं आ जाऊंगा।"

आठ दिन बाद ऊंट आया। सियार तो पहले ही तैयार था, दोनों नदी के किनारे पहुंचे।

सियार ने कहा, "ऊंट भाई, मैं तो बहुत छोटा हूं, नदी में डूब जाऊंगा, तुम मुझे अपनी पीठ पर बैठा कर, ले चलो तो बड़ी मेहरबानी होगी।"

ऊंट ने कहा—"आ जाओ, मेरी पीठ पर, लेकिन खूब जोर से पकड़ कर बैठना।"

सियार ऊंट की पीठ पर चढ़ कर बैठ गया। धीरे-धीरे ऊंट ने नदी पार कर ली, फिर दोनों इधर-उधर छिपते रहे। जब रात में रखवाले सो गये तो दोनों खेत में घुसे और खूब स्वाद ले-लेकर फूट खाने लगे। सियार का पेट छोटा था, वह जल्दी ही भर गया, उसने ऊंट से चलने को कहा, पर ऊंट बड़ा जानवर था, उसका पेट अभी भरा न था, उसने पूरा पेट भरने के बाद जाने की बात कही।

सियार ने कहा—"ऊंट भाई। खाने के बाद मेरी हुक्का-धुंआ करने की आदत है, मैं क्या करूं?"

ऊंट ने कहा—"देखो। तुम हुक्का धुंआ करोगे तो रखवाले जग जाएंगे और हम दोनों को बहुत



मार पड़ेगी, इसलिए थोड़ी देर शान्त रहो, मुझे भी पेट-भर खा लेने दो।''

सियार थोड़ी देर तो चुप रहा, पर फिर झाड़ी में घुस कर हुक्का-धुंआ, हुक्का-धुंआ करने लगा। रखवाले तुरन्त जग गये, और खेतों में दौड़ पड़े। सियार तो झाड़ीं में छुप गया था, पर ऊंट बड़ा होने के कारण छुप न सका। रखवालों ने ऊंट को खूब पीटा, इतना कि वह चल नहीं सकता था। और उसके गले में एक बड़ी सी लकड़ी बांध दी। रात में किसी तरह, ऊंट सरक-सरक कर नदी किनारे पहुंचा। सियार पहले ही वहां पहुंच गया था। सियार ने पूछा—''ऊंट भाई। तुम्हारे गले में क्या है?'' ऊंट ने कहा—''भाई यह तगमा है, मार खाने का इनाम।''

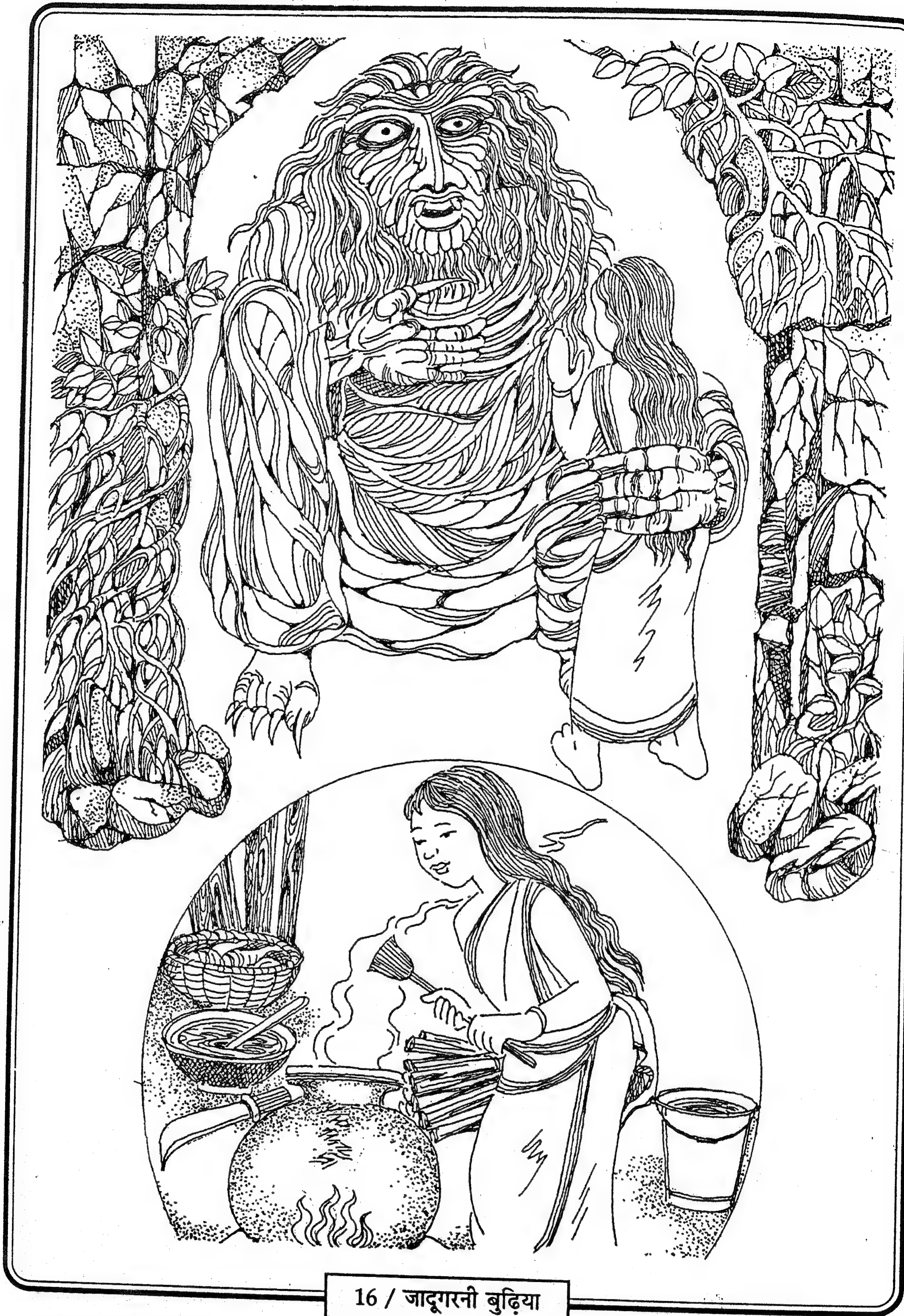
सियार ने कहा—''ऊंट भाई! मुझे अपनी पीठ पर बैठा लो, मैं भी नदी पार जाऊंगा।''

ऊंट कुछ नहीं बोला। सियार उसकी पीठ पर बैठ गया। ऊंट जब नदी के बीच में पहुंचा तो बोला—''सियार भाई! मुझे तो लोटास लगी है, मुझे लोटने की आदत है।''

सियार गिड़गिड़ाने लगा, ''भाई नदी पार करके लोटना, नहीं तो मैं डूब जाऊंगा, मैं तो तैरना नहीं जानता। मुझे पार कर दो, ईश्वर तुम्हें सुख देगा।''

ऊंट कुछ नहीं बोला, थोड़ा आगे बढ़ा, जब बीच धारा आ गई तो बोला—''अब तो मैं नहीं रुक सकता, मुझे लोटास लगी है, मैं तो लोटूंगा।'' यह कर कर ऊंट पानी में गोता लगाने लगा, सियार उसकी पीठ पर से गिर गया और नदी में डूब गया।

बच्चों! इसीलिए कहते हैं, कभी दूसरों का बुरा न करो, नहीं तो अपना बुरा होता है। ऊंट और सियार की कहानी से तुम्हें यह उपदेश लेनी चाहिए।



जादूगरनी बुढ़िया

एक समय की बात है। एक जादूगरनी बुढ़िया बच्चों को पकड़ कर ले जाती और उन्हें मार कर खा जाती थी। बुढ़िया की एक लड़की थी। वह उसे बहुत प्यार करती थी। बुढ़िया की बेटी, उसे बहुत समझाती थी पर बुढ़िया को आदमी के मांस खाने का आदत पड़ गई थी।

एक दिन की बात है। बुढ़िया भीख मांगने निकली। उसने देखा, एक सुन्दर लड़की पेड़ पर चढ़ जामुन तोड़-तोड़ कर खा रही है। बुढ़िया ने नीचे से कहा—"बेटी हमें भी जामुन दो। मुझे बहुत भूख लगी है।"

लड़की ने थोड़े जामुन तोड़ कर नीचे गिराये, पर बुढ़िया ने नहीं लिया, बोली—"ये तो मिट्टी में गिर कर मटियाइन हो गये हैं, कैसे खाऊंगी?"

लड़की ने कहा—"बूढ़ी मां! आचल में ले लो मैं फिर गिरा देती हूं।"

बुढ़िया बोली—"आंचल में अचलाइन हो जाएगा, तुम खुद उतर कर मेरे हाथ में जामुन दो, तो मैं खाऊंगी।"

लड़की जामुन लेकर नीचे आई, तो बुढ़िया ने धर लिया और जादू के जोर से अपने वश में कर लिया। जब वह बेहोश हो गई तो उसे अपने झोले में रख लिया। पीठ पर झोले को लेकर आगे चली। रास्ते में बुढ़िया को लघुशंका लगी तो उसने झोले को जमीन पर रख दिया। उतनी देर में लड़की को होश आ गई। वह झोले से बाहर निकल गई, और थोड़े पत्थर झोले में भर दिये फिर दौड़ कर एक पेड़ पर चढ़ गई। बुढ़िया जब लघुशंका से उठी तो उसने झोला उठाया, पीठ पर रखा और चल पड़ी। झोले में पत्थर जब हिलते तो बुढ़िया को चोट लगती, तो बुढ़िया ने सोचा लड़की उसे मार रही है।

बुढ़िया कहने लगी—"ठीक है, मारो! आज तुम्हारा मांस बनाकर खाऊंगी।"

बुढ़िया घर पहुंची, झोला खोला तो उसमें कंकड़ पत्थर देख कर लड़की को गाली देने लगी। फिर उसने संकल्प किया कि लड़की को अबकी पकड़ कर लाऊंगी तो सीधे घर ही लेकर आऊंगी।

बुढ़िया दूसरे दिन फिर निकली, उसने देखा लड़की कुछ बच्चों के साथ खेल रही थी। बुढ़िया ने भेष बदल रखा था। इस कारण लड़की उसे नहीं पहचान पाई। बुढ़िया ने लड़की को पानी पिलाने को कहा। वह दौड़ कर पानी ले आई। बुढ़िया ने पानी पी लिया और लड़की को पकड़ कर झोले में बैठा लिया। वह सीधे अपने घर आई बीच में कहीं नहीं रुकी। उसने अपनी बेटी को बुलाकर सब समझा दिया कि इस लड़की का मांस बनाना और गेहूं के आटे की रोटी बनाना और उसमें घी चुपड़ कर रखना, मैं आकर खाऊंगी। यह कह कर जादूगरनी बुढ़िया बाहर चली गई।

बुढ़िया की बेटी अच्छे स्वाभाव की थी। उसे वह लड़की बहुत प्यारी लगी। मां पर बहुत गुस्सा आया कि वह इतने अच्छे बच्चों का जान मार देती है। बुढ़िया की बेटी, उस लड़की से बातें करने लगी। उसने पूछा, "तुम्हारे बाल इतने लम्बे कैसे हुए हैं?"

लड़की बहुत चालाक थी। उसका दिमाग भाग निकलने की तरकीब सोच रहा था। उसने जवाब

दिया कि उसकी मां ओखली में उसका सर रख कर मूसल से धीरे-धीरे मारती थी, तो बाल बढ़ गये।

बुढ़िया की बेटी के बाल छोटे-छोटे थे। उसने कहा—''बहन! मेरे भी बाल उसी तरह बड़े कर दो।'' और जल्दी से ओखली मूसल लाकर दे दिया। फिर अपना सर ओखली में रखा और बोली—''बहन तुम मेरे सर पर मूसल मारो। मेरे भी बाल तुम्हारे जैसे हो जाएं।''

लड़की ने मूसल से बुढ़िया की बेटी के सर पर चोट की। एक ही चोट में बुढ़िया की बेटी मर गई। फिर उसने बुढ़िया की बेटी के कपड़े उतार कर खुद पहन लिये। और जल्दी से मांस और गेहूं की रोटी बना दी।

बुढ़िया शाम को आई, आते ही उसने खाना मांगा। लड़की ने खाना परोस कर दे दिया। शाम को अंधेरे में बुढ़िया यह न जान सकी कि यह उसकी बेटी नहीं है। खाना देकर लड़की दूसरी तरफ मुंह करके खड़ी हो गई।

बुढ़िया खूब स्वाद ले-ले कर खाने लगी, जब खा चुकी तो बोली—''बहुत स्वाद का मांस बना है, तू भी जल्दी से खा ले, देख कितना मजा आएगा।''

लड़की ने बाहर का दरवाजा धीरे से खोल दिया फिर ताली पीट-पीट कर कहने लगी—

''धी के मांस
गेहूं की रोटी
बुढ़िया गपाके खाए रोटी।''

इतना कह वह भाग खड़ी हुई। पहले तो बुढ़िया हक्की-बक्की रह गई। जब होश आया तो अपना सर पीटने लगी। उसने मूसल उठा कर अपने सर पर दे मारा कि मेरी बेटी नहीं रही तो मैं जीकर क्या करूंगी?

इस प्रकार जादूगरनी बुढ़िया का अन्त हो गया, और कितने बच्चों की जान बच गई।

बच्चो, ऐसे दुष्ट लोगों को ऐसी ही सजा मिलती है। बुरे काम का नतीजा सदा बुरा ही होता है।

नीड़

जाड़े का समय था। एक पेड़ पर बया पक्षियों ने घोंसला बना लिया था। एक दिन जोर से वर्षा हुई। ओले पड़ने लगे। बिजली कड़कने लगी। पानी पीट-पीट कर बरस रहा था। बया पक्षियों ने ऐसा घोंसला बनाया था, कि उन्हें कोई परेशानी नहीं थी, बल्कि वे वर्षा का आनन्द ले रहे थे।

बया पक्षी अपने घोंसले में दो कोटर बनाते हैं। भीतर वाले में उनके बच्चे सुरक्षित रहते हैं, आगे वाले में वे स्वयं रहते हैं। घोंसले का मुंह नीचे की ओर होने से, पानी जाने की कोई गुंजाइश नहीं होती।

उस वृक्ष के नीचे, पानी और ओलों से बचने के लिए, कुछ बन्दरों ने शरण ली। उनका हाल-बेहाल था। पानी से भीग कर तर-बतर हो रहे थे। एक दूसरे से सट कर बैठे थे, फिर भी कांप रहे थे। इतनी ठंड थी कि उनके दांत बज रहे थे।

बया पक्षी ने झांका तो बन्दरों को बेहाल देख कर उसे बड़ी दया आई। वह बोली—''भाइयों, मुझसे तुम्हारी हालत देखी नहीं जाती, पर मैं क्या करूं? मेरा घर इतना छोटा है कि मैं तुम्हें शरण नहीं दे सकती। यदि तुमने अपना घर बना लिया होता तो तुम्हारी यह दशा न होती। देखो! आज तुम कितने कष्ट में हो।''

बन्दरों को उसकी बात अच्छी नहीं लगी। वे किटकिटाने लगे, और गुस्से से देख कर एक बोला—''चुप रह, मुझे क्यों परेशानी हो रही है, हम घर बनावे या न बनावें, तुझसे मतलब?''

बया पक्षी बोली—''महानुभाव! मेरा मतलब यह नहीं है...पर मुझे तुम लोगों पर बड़ी तरस आ रही है। मैं तो बस यही कह रही हूं कि अगर तुम भी अपने रहने का ठिकाना बना लिया करो तो तुम्हें वर्षा और धूप से राहत मिल जाया करेगी। देखो! हम इतनी छोटी चिड़ियां हैं, पर अपने लिए घर बना लेती हैं। हम एक-एक तिनका चोंच से उठा कर लाती हैं, और वर्षा ऋतु के पहले अपना 'नीड़' बना लेती हैं। अगर तुम थोड़ा भी सोच लो, तो यह नौबत नहीं आवे, सुनो—

आदमी जैसा हाथ पैर,
आदमी जैसी काया-
चार महीने की वर्षा आई,
मड़ई क्यों न छाया।''

इतना सुनते ही बन्दर सब पानी पानी हो गये। उनका गुस्सा ठंडा पड़ गया। शर्म से सर झुक गया।

उन्होंने कहा—''बया रानी! तुम ठीक कहती हो, पर हम घर नहीं बना सकते। क्योंकि हम लोगों की प्रवृत्ति एक स्थान पर रहने की नहीं है। आज यहां तो कल वहां। तो घर बना कर क्या करेंगे। पर हम अब तुम्हारी बात पर सोचेंगे, और किसी पेड़ की मोटी डाल पर जो पत्ते से घनी होगी, उसी पर अपना डेरा जमाएंगे। बया रानी! तुम्हारी सीख के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।''

बच्चों! अगर आदमी भी इसी तरह एक दूसरे को नेक सलाह दे, तो यह संसार कितना सुखमय हो जाएगा। सारी अमानुषता, बैर, वैमनस्य और कुटिलता समाप्त हो जाएगी और फिर एक नया सवेरा होता दिखाई देगा।



राजकुमारी सोनामती

बहुत पहले की बात है। नेपाल की तराई में, 'साकेत' नाम का एक छोटा सा राज्य था। उसे एक बड़ी जमींदारी ही समझिए। क्योंकि पहले बड़े-बड़े जमींदारों को "राजा साहब" की पदवी दे दी जाती थी। उस इलाके के बगल से होकर एक पहाड़ी नदी बहती थी। वह नदी और पहाड़ी नदियों की तरह सूखती नहीं थी, हमेशा उस नदी में पानी रहता था। लोगों का कहना था कि उस नदी के बीच में कहीं ऐसा पानी का सोता, झरना की तरह का था, जिससे बराबर पानी आता रहता था। इसी कारण वह नदी बराबर पानी से पूर्ण रहती थी। इसी कारण अगल-बगल का इलाका पूरा हरा-भरा था, तथा खेतों में पैदावार भी काफी होती थी। वह इलाका धन-धान्य से परिपूर्ण था। लोग मेहनती तथा ईमानदार थे।

वहां का राजा जित्येन्द्र समर सिंह बहुत सज्जन तथा न्यायप्रिय था। वह प्रजा का ख्याल रखने वाला, उसकी तकलीफ को दूर करने वाला तथा उदार था। उसकी एक चांद सी बेटी थी। उस राज्य के सभी लोग राजकुमारी को बहुत प्यार करते थे। लेकिन राजकुमारी के सर पर बाल नहीं थे। रानी को इस बात की चिन्ता सताती थी कि राजकुमारी बालों के बिना कैसी लगेगी? काफी दिनों बाद, राजकुमारी के सर पर सुनहरे बाल दिखने लगे। जैसे-जैसे कुंवर बड़ी होती गई, बालों का सुनहरापन बढ़ता गया। बाल सुनहरे थे, पर बहुत ही मुलायम तथा चमकदार थे। राजकुमारी जैसे-जैसे बड़ी होने लगी, उसका रूप भी निखरने लगा। बाल भी खूब लम्बे हो गये।

राजा के महल के पीछे, एक सुन्दर बागीचा था। उस बागीचे के पीछे वह नदी बहती थी। नदी में नहाने के लिए, सीढ़ियां तथा बारहदरी बनी हुई थी। राजकुमारी अक्सर अपनी सहेलियों के साथ नदी में स्नान करने जाती थी। एक दिन नहाते समय, सर के कुछ बाल टूट गये, टूटते ही, वह सुनहरे बाल कड़े पड़ गये, तथा सोने के हो गये। राजकुमारी को बहुत चिन्ता हुई कि इन सोने के बालों का क्या करें?

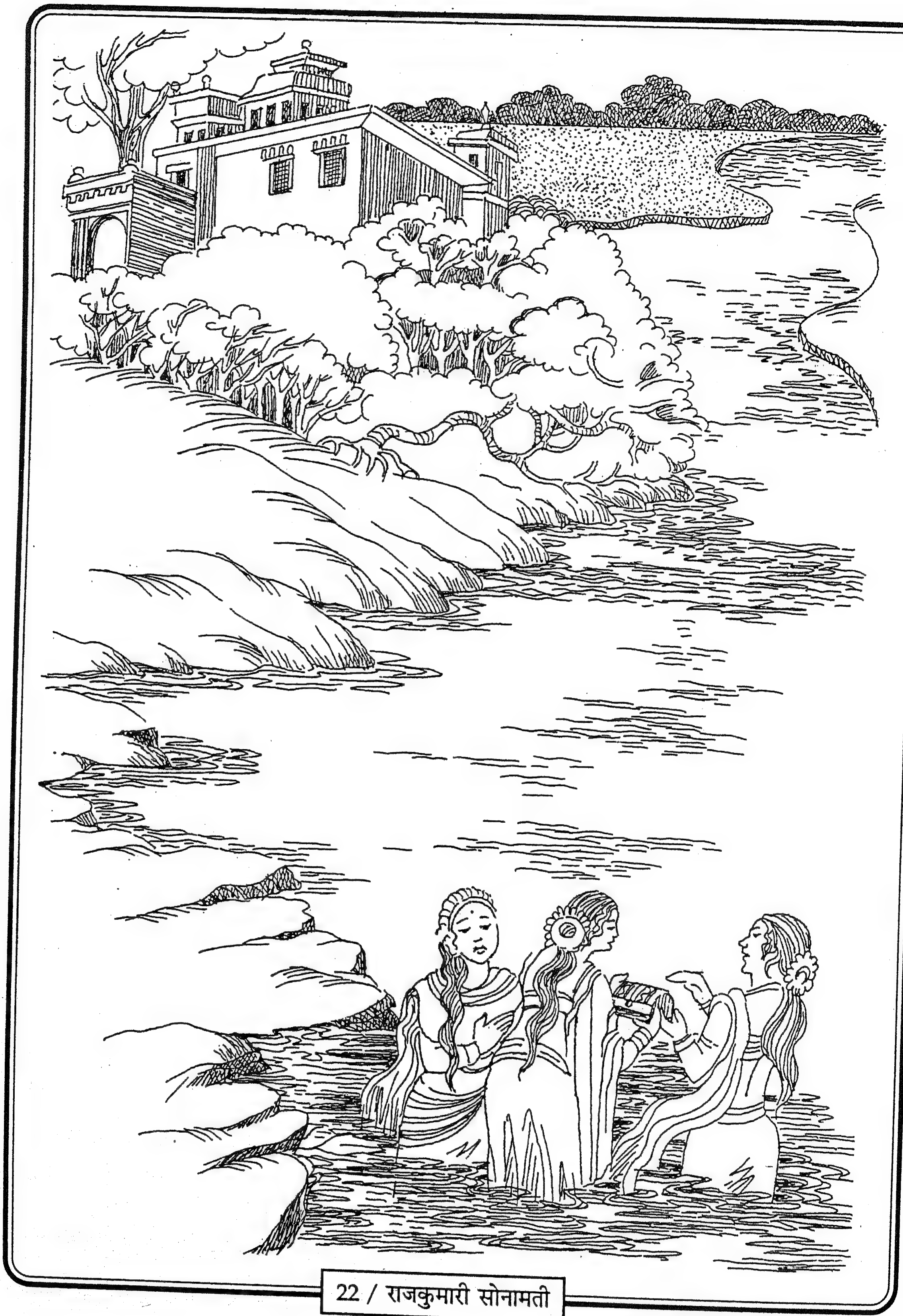
सखियों ने कहा कि इन्हें छोटे से काठ के बक्से में डाल कर नदी में बहा दिया जाए।

राजकुमारी ने वैसा ही किया। बड़े-बड़े बालों के गुच्छे को मोड़ कर, काठ के एक छोटे, सुन्दर से बक्से में रख कर बहा दिया गया। काठ का वह छोटा बक्सा, बहते-बहते भारत की एक नदी में पहुंच गया। वहां नदी में सेवार बहुत थी, बक्सा उसी में फंस गया। लहरों के झोंके से सेवार नदी के किनारे जा लगा। उधर एक राजकुमार जो आखेट पर निकला था, अपने घोड़े को पानी पिलाने नदी के किनारे आया तो उसने काठ के उस सुन्दर बक्से को देखा। राजकुमार को बहुत आश्चर्य हुआ कि इस घोर जंगल में यह सुन्दर बक्सा कहां से आया? उसने अपने साथ के आदमियों से कहा कि वे उस बक्से को निकाल कर ले आयें, जिसका होगा उस तक पहुंचा दिया जाएगा।

हुक्म सुनते ही साथियों ने बक्से को निकाल लिया। फिर उसे खोला तो देखकर दंग रह गये, कि उसमें सुनहरे बालों का एक गुच्छा रखा था। उसे छूने पर मालूम हुआ कि वे बाल सचमुच सोने के थे। बाल बहुत ही लम्बे थे, जिन्हें मोड़ कर रखा गया था।

राजकुमार विजय सिंह उसे लेकर अपने घर आया। उसने अपनी मां से सब बताया, और पता लगाने को कहा कि ये सुन्दर बाल किसके हैं? ये सुन्दर बालों का गुच्छा जिसका है, वह उसी से शादी करेगा।

रानी अपने बेटे की यह बात सुन कर बहुत परेशान हुई। रानी के यही एक पुत्र था। वह अपने बेटे



को दुखी नहीं देखना चाहती थी। रानी ने एक सभा का आयोजन किया, और बाल को दिखा कर कहा कि इस सुनहरे बालों वाली लड़की का पता जो लगाएगा, उसे राज्य का चौथाई हिस्सा दे दिया जाएगा।

यह सुनते ही, लोगों में खलबली मच गई। पता लगाने के लिए, तमाम लोग चल पड़े पर कुछ न मालूम कर पाए। छह महीने तक राजकुमार विजय सिंह बाहर नहीं निकला। वह रात-दिन उस गुच्छे को देखता रहता। रानी अपने बेटे की यह हालत देख कर बहुत परेशान थी। तभी एक दूत ने आकर खबर दी, कि "नेपाल की तराई में साकेत नामक नगरी में जित्येन्द्र समर सिंह नाम का राजा है, उसकी कन्या सोनामती के बालों का गुच्छा है।"

यह मालूम होते ही रानी ने तुरन्त पैगाम भिजवाया तथा राजकुमारी से अपने बेटे की शादी करने का आग्रह किया। पर वहां के राजा ने इनकार कर दिया कि वे अपनी कन्या की शादी नेपाल के बाहर नहीं करेंगे।

राजकुमार को जब यह मालूम हुआ तो उसे बहुत निराशा हुई। राजकुमार का एक मित्र जो उसे बहुत चाहता था, उसने कहा—"परेशान मत हो, हम उपाय करेंगे, तुम्हारी शादी सोनामती से ही होगी।"

उसने रानी मां से बात की, और काफी धन और अपनी बहन को साथ लेकर राजकुमार के साथ चल पड़ा। नदी तथा जंगल पार करते हुए वे नेपाल पहुंच गए। वहां शिव जी का एक मंदिर था। उसी के निकट साधू का भेष धारण कर वे कुटी बनाकर रहने लगे।

जब शिवरात्रि का समय आया, तब राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ, शिवपूजन को आई। राजकुमार के दोस्त की बहन भी उसी समय मंदिर में आई। उसने राजकुमारी से कहा कि उसका पूरा परिवार इस जंगल से गुजर रहा था, तभी कुछ डाकुओं ने मार-काट मचा दी। सभी लोग मारे गये। मैंने किसी तरह भागकर जान बचाई। अब मैं साधुओं की कुटी में हूं। मुझे आप अपनी दासी की जगह दे दें। मैं अनाथ हूं, आपकी शरण में मेरी सुरक्षा रहेगी।"

राजकुमारी नरम दिल की थी। उसने अपनी सहेलियों से पूछा तो सबने यही कहा कि "रख लो राजकुमारी, यह हम लोगों के बीच रह जाएगी, किसी अच्छे परिवार की लगती है, किस्मत ने इसे ऐसा कर दिया है।"

राजकुमारी सोनामती ने कृष्णा को रख लिया। कृष्णा पढ़ी-लिखी सुशिक्षित युवती थी। वह राजकुमारी को देश-विदेश की खबरें सुनाती, तथा तरह-तरह के चुटकुले और कहानियां सुनाती थी। राजकुमारी का मन खूब प्रसन्न रहता। राजकुमारी कृष्णा को बहुत प्यार से रखती थी। कहती—"तुम तो मेरी बहन के समान हो।"

कृष्णा राजकुमारी के साथ, छाया की तरह रहती। नदी में स्नान साथ ही करती। मंदिर में साथ ही पूजन को जाती। एक दिन कृष्णा जब शिवमंदिर जा रही थी, तभी राजकुमार अपने सही रूप में घोड़े पर चढ़ कर शिवमंदिर के पास आया और अजनबी की तरह कृष्णा से बोला, "बहन, मैं रास्ता भटक गया हूं, मुझे दो दिन कहीं ठहरने की जगह बताएं?"

कृष्णा ने राजकुमारी सोनामती से कहा—"यह किसी देश का राजकुमार लगता है, राजकुमारी जी इसे अतिथिशाला में ठहरने की इजाजत दिलवा दें।"

राजकुमारी ने महल में आने पर अपने पिता को बताया कि एक राजकुमार शिकार के लिए आया है। वह जंगल में भटक गया है। रहने की इजाजत मांग रहा है। राजा ने सुना तो आज्ञा दे दी।



राजकुमार विजय सिंह अपने मित्र के साथ, अतिथिशाला में ठहर गया। वहां उसे काफी सत्कार के साथ रखा गया।

एक दिन राजकुमारी महल के ऊपर अपनी सहेलियों के साथ खड़ी थीं, तभी उसने राजकुमार को घोड़े से उतरते देखा। दोनों की नजरें मिलीं। राजकुमार विजय सिंह सुन्दर युवक था। राजकुमारी उसे देख कर मोहित हो गई।

उस दिन से राजकुमारी उदास रहने लगी। कृष्णा ने पूछा, वह इतनी उदास क्यों है? पहले राजकुमारी ने कुछ नहीं बताया पर बहुत पूछने पर सब बता दिया कि राजकुमार ने उसके मन में अनुराग जाग दिया है। अगर मेरी शादी उससे न हुई तो मैं शादी करूंगी ही नहीं।

.कृष्णा तो यह चाहती ही थी। उसने सोनामती को, विजय सिंह से मिला दिया। विजय सिंह ने भी वही बात दोहराई कि मैं और किसी से शादी नहीं करूंगा।

इस प्रकार कृष्णा की मदद से दोनों मिलने लगे। एक दिन की बात है। जब विजय सिंह फुलवारी में राजकुमारी से बात कर रहा था, तभी रानी वहां पहुंच गई। उन्होंने देख लिया कि कोई पुरुष उनकी बेटी का हाथ पकड़ कर बैठा है। रानी क्रोध में उनके सामने पहुंच गईं। पहले सोनामती बहुत घबराई फिर तुरन्त वह मां के पैरों से लिपट गई और बोली—''मां अगर मेरी शादी राजकुमार से नहीं हुई तो मैं नदी में डूब कर जान दे दूंगी।''

रानी थोड़ी नरम दिल की थी। ठंडे मन से सोचने लगी, फिर बेटी से बोली—''तुम्हारे पिता जी को मालूम होगा तो इस युवक की जान ले लेंगे। ठीक है, मैं कोई उपाय करूंगी।''

राजा के आने पर रानी ने कहा—''राजा साहब जो युवक आपके अतिथिशाला में ठहरा है, वह भारत के एक बड़े राज्य का राजकुमार है। उसके मित्र से मुझे मालूम हुआ है। लड़का बहुत सुन्दर और सज्जन है, आप अपनी जिद छोड़ दें, वह राजकुमार आपका दामाद बनने योग्य है।''

राजा भी कुछ दिनों से परेशान थे, राजकुमारी के योग्य कोई वर उन्हें नजर नहीं आ रहा था। कुछ सोचने के बाद राजा ने कहा—''पूरी तरह से पता लगा लिया जाए, तब सोचेंगे।''

दूसरे दिन राजा ने मंत्री से बात की, और कुछ घुड़सवारों के साथ मंत्री को पता लगाने के लिए भेज दिया। यह मालूम हो गया कि राजकुमार एक बहुत बड़े राज्य का उत्तराधिकारी है। फिर क्या था? राजा ने खुशी-खुशी पैगाम भेजा कि राजकुमार की शादी उनकी बेटी से कर दें। राजकुमार विजय सिंह उनके अतिथि हैं। हम बहुत अनुग्रहित होंगे।

विजय सिंह के पिता बहुत बड़ी सेना और बारात लेकर वहां पहुंच गये। फिर बड़े धूम-धाम से विजय सिंह के साथ राजकुमारी सोनामती की शादी हुई। राज्य में महीनों उत्सव मनाया गया।

जब राजकुमारी अपने ससुराल गई तो उसकी सास ने आरती उतारी और बहुत प्रसन्न हुई। इस प्रकार दो देशों का सम्बन्ध आपस में जुड़ गया।

शादी के बाद जब राजकुमार अपनी पत्नी सोनामती से मिले, तो उन्हीं ने सब कुछ बता दिया कि हम तुम्हारे प्यार में साधू तक बन गये थे।

सोनामती ने अपने पति को अनुराग भरी आंखों से देखा, उसकी आंखें वह सब कुछ कह रही थीं जो मुंह से बयान नहीं किया जा सकता।



लकड़हारे का बेटा

एक विशाल जंगल था। उसके आसपास छोटे-छोटे गांव बस गए थे। उन गांवों में अधिकतर गरीब किसान और लकड़हारे रहते थे। किसानों ने जंगल साफ कर अपनी खेती के लायक कुछ जमीन ठीक कर ली थी। उसमें अपने खाने भर का अनाज पैदा कर लेते थे। जलावन के लिए जंगल से लकड़ी ले आते। बांस और ताड़ के पत्तों से अपने रहने का मकान बना लिया था। चारों तरफ बांस का घेरा बना रखा था, जिससे जंगली जानवरों से हिफाजत रहती थी। लकड़हारों ने कुछ और मजबूत घर बना लिए थे। उनके घर, नीचे लकड़ी रखने के तथा ऊपर रहने के हिसाब से बने थे।

एक लकड़हारा, जिसके पांच बेटे थे, वह बहुत गरीबी से दिन काट रहा था। दिन भर लकड़ी काटता, उसके बेचने से जो पैसे मिलते, उससे सात प्राणियों को खाना मुश्किल से चलता था। बच्चे थे तो छोटे, पर खुराक बड़ों की खाते थे। दोनों पति-पत्नी रोज ही आधा पेट खाकर रह जाते थे। कभी तो एक ही रोटी बचती, जिसे दोनों आधा-आधा खाकर पानी से पेट भर लेते थे।

इस तरह उनके दिन बीत रहे थे। एक दिन लकड़हारा, अपनी पत्नी से बोला—"मेरा मन कुछ अच्छी चीज़ खाने को हो रहा है।"

पत्नी बोली—"पेट भरने की नौबत नहीं है, तुम्हें अच्छी चीज़ की सुधि कैसे हुई।"

लकड़हारे ने कहा—"मैंने थोड़े-थोड़े पैसे रोज के बचा कर रखे हैं, एक दिन तो पेट भर कुछ अच्छा भोजन करते। वैसे हम लोगों की तकदीर में अच्छा भोजन कहां है।"

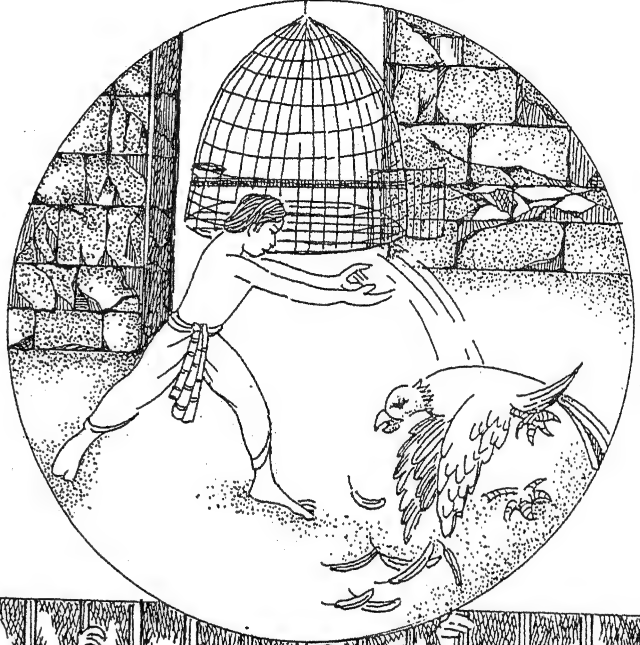
पत्नी कुछ नहीं बोली। लकड़हारे ने बताया कि वह चावल और गुड़ खरीद कर लाएगा, और बकरी के दूध में खीर बना ली जाएगी। जब वह पत्नी से कह रहा था, उस समय उसका छोटा बेटा, निकट ही सोया था। उसने सब सुन लिया था और अपने सब भाइयों को मां-बाप की वह बात बता दी थी। फिर क्या था? सब बच्चे सतर्क हो गए। सबने एक-एक चीज अपने पास रख लिया। आधी रात के समय, जब लकड़हारा उठा, तो उसने अपनी पत्नी को जगाया। पत्नी ने चूल्हा जलाने के लिए दियासलाई ढूंढी तो छोटा बोला—"मां मेरे पास है।"

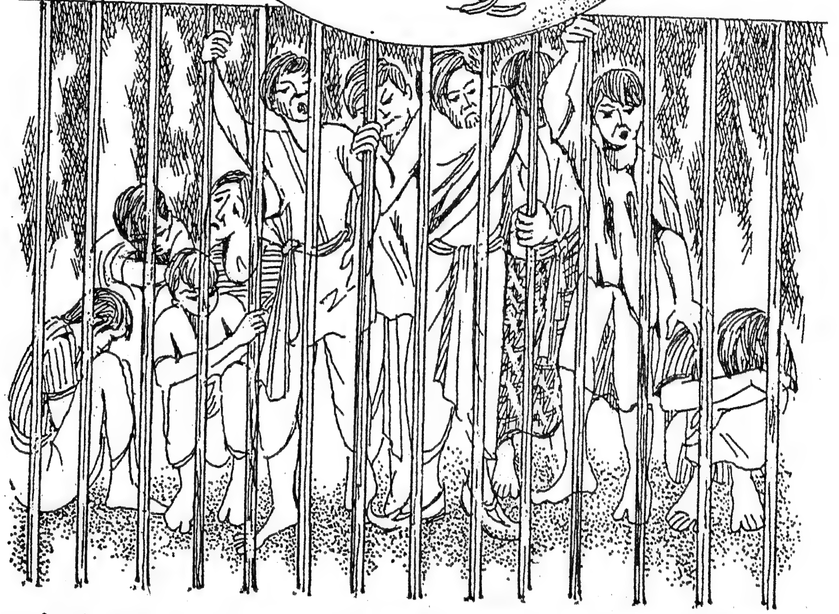
लकड़हारा बोला—"तुम चुपचाप उठ आओ।"

चूल्हा जलाने के बाद बटलोही की खोज हुई, तो बड़ा बोला—"मां मेरे पास है"। उसको भी धीरे से उठ आने को कह दिया। फिर उसने दूध में चावल और गुड़ डाल दिया, फिर चलाने के लिए करछुल खोजने लगी तब दूसरा और तीसरा बोला—"मां मेरे पास है"। इस प्रकार पांचों बेटे उठ गये। खीर बनकर तैयार हुई तो पांचों बेटों को खिला दिया तथा जो बचा उसे लकड़हारे के सामने धर दी, स्वयं उसने बटलोही में हाथ डाल कर निकाला, और उसे चाट कर सब्र कर लिया।

कुछ दिन के बाद लकड़हारा बोला—"घर में तो हम खा नहीं पाएंगे, चलो। जंगल में चलकर बनाएंगे, तभी ठीक से खा सकेंगे।"

छोटा बेटा सब सुन रहा था, उसने रात में अपनी रोटी नहीं खाई। चार बजे जब उसके मां-बाप उठकर चले, तो वह पीछे हो लिया और रास्ते में रोटी तोड़-तोड़ कर डालता गया, कि उसी से रास्ता





पकड़कर, भाइयों को बुला लाएगा। जब उसने देखा मां-बाप एक जगह पर रुक गए हैं, तब वह लौट पड़ा। थोड़ी दूर तो रोटी के टुकड़ों से सहारे आगे बढ़ा, पर फिर गड़बड़ हो गई, उजाला होने पर चिड़ियों ने रोटी का टुकड़ा खा लिया था। वह बहुत देर तक भटकता रहा, यहां तक कि बेर ढल गई। तब उसने एक ऊंचे पेड़ पर चढ़कर चारों ओर देखा, उसे दूर पर एक दिया टिमटिमाता नजर आया, जो एक मकान के सामने जल रहा था। पेड़ से उतरकर वह लड़का उधर को चला, बीच-बीच में किसी पेड़ पर चढ़कर, रास्ता देख लेता, इस तरह वह उस मकान के पास पहुंच गया। उसने दरवाजा खटखटाया, तो एक बूढ़ी औरत ने दरवाजा खोला।

लड़के को देखते ही बुढ़िया ने कहा—"तुम यहां से भाग जाओ, यह राक्षस का घर है, वह आएगा तो तुम्हें खा जाएगा।"

लड़के ने कहा—"दादी! मैं रास्ता भटक गया हूं। मैं थका हूं, अब आगे नहीं चल सकता। मुझे भूख भी लगी है। मुझे राक्षस खा जाए तो खा जाए, मैं यहां से नहीं जाऊंगा।"

उस बूढ़ी औरत को उस बच्चे पर बहुत तरस आ रही थी। उसने बच्चे को खाने को दिया, और उसे मक्खी बना दिया। राक्षस के आने का समय हो गया था।

राक्षस ने आते ही कहा—"छिः मानुष छीः मानुष।" बुढ़िया ने बताया यहां मानुष कहां है, जो राजा बन्दी बने हैं, वही मानुष हैं। राक्षस थका था, खाना खाकर सो गया। वह दूसरे दिन सबेरे ही चला गया।

बुढ़िया ने लड़के को, उसके असली रूप में कर दिया और उसे घर चले जाने को कहा, पर लड़का राजी नहीं हुआ।

इस प्रकार लड़के को यहां कई दिन हो गये। उस बूढ़ी औरत को बच्चे से प्यार हो गया। बच्चा दिन में उसका अकेलापन दूर करता था। एक दिन बच्चे ने पूछा—"दादी! इन कोठरियों में क्या है? हमें भी दिखा दो।"

बुढ़िया ने उसे एक-एक कमरा घूमकर दिखा दिया। सब कमरे सामान से भरे हुए थे। कुछ में धन था, कुछ में कपड़े तथा हथियार थे। बुढ़िया ने एक कमरा नहीं खोला, उसमें एक तोता, सोने के पिंजड़े में था, बुढ़िया ने बताया, उसमें उसके बेटे का प्राण बसता है, अगर तोता मर गया तो मेरा बेटा भी मर जाएगा। इसी से इस कमरे को केवल मेरा बेटा खोल सकता है।

एक दिन बुढ़िया सो रही थी, तो लकड़हारे के बेटे ने कुंजी निकाल ली। उसने तहखाने के नीचे के कमरे को खोला, जिसमें कुछ लोग बन्द थे। राक्षस जब आदमी को पकड़ लाता तो उसे कमरे में बन्द कर देता था। उसमें लोहे की जाली लगी थी। फिर बारी-बारी से एक-एक को खाता था।

फिर उसने तोते वाला कमरा खोला। पिंजड़े को थोड़ा सा खोल कर तोते का एक पैर तोड़ दिया, उधर राक्षस को मालूम हो गया, क्योंकि उसका एक पैर बेकार हो गया था, लड़के ने दूसरा पैर भी तोड़ दिया, तब राक्षस घिसट-घिसट कर अपने घर की ओर दौड़ा। वह जैसे दरवाजे पर पहुंचा, लड़के ने तोते की गरदन ऐंठ दी। राक्षस दरवाजे पर मर गया।

अब लड़के ने भूतल की कोठरी से ताला खोल कर सभी बन्दी हुए आदमी को निकाल दिया। बुढ़िया ने जब देखा, कि उसका बेटा मर गया है, तो वह भी सर पटक कर मर गई।

उन बन्दी लोगों में कुछ राजकुमार भी थे, जो जंगल में शिकार खेलने आए तो राक्षस ने उन्हें पकड़ लिया था। राक्षस जब मर गया तो वह सब बहुत खुश हुए। उन्होंने राक्षस का सारा सामान लड़के के घर पहुंचवा दिया, तथा अपनी तरफ से उसके रहने को मकान बनवा दिया।

इस प्रकार वह लड़का अपने मां-बाप और भाइयों के साथ सुख से रहने लगा। लकड़हारे के बड़े लड़के को उन राजकुमारों ने नौकरी लगवा दी।

इस प्रकार गरीब लकड़हारे के दिन बदल गए जिन्हें कभी पेट-भर भोजन नहीं मिलता था, वे अब दूसरों को खाना देने में समर्थ थे।

ईमानदारी का फल

बहुत पहले की बात है। उस समय पढ़े-लिखे लोग कम ही होते थे। ज्यादातर लोग मेहनत से रोजी-रोटी कमाते थे। जंगलों में, देहातों में उतनी सभ्यता भी नहीं थी, पर लोग आपस में प्रेम और विश्वास रखते थे। उन लोगों की दुनिया आपसी प्रेम और भरोसे पर ही कायम थी।

किसी गांव में एक लकड़हारा रहता था। उसका परिवार बड़ा था। उसकी पत्नी, चार बच्चे और एक अनाथ औरत थी जो उसकी पत्नी के काम-काज में मदद करती। लकड़हारा दिन भर जंगलों में लकड़ी काटता और उसे बेचने से जो पैसे मिलते उससे परिवार का पेट पालता। उसकी पत्नी ने कुछ बकरियां और गदहे पाल रखे थे। बकरियों से दूध का काम चलता तथा गदहे जंगल से लकड़ी लादकर लाने में काम आते।

लकड़हारा जब लकड़ी काटते-काटते थक जाता तो थोड़ा आराम कर लेता था। एक दिन वह लकड़ी काटने के बाद थोड़ा आराम करने लगा। जैसे ही उसकी आंख लगी, उसे घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई दी। वह अकबका कर उठ बैठा, कि इस घने जंगल में, यह आवाज कहां से आ रही है? तभी उसे धूल उड़ती हुई दिखाई दी। वह तुरंत पेड़ की ऊंची डाल पर चढ़ गया। उसने देखा, पहाड़ों की तरफ कुछ घुड़सावर जा रहे हैं। उसे समझने में देर न लगी कि यह सब डाकू होंगे, जो लूट-पाट करके कहीं से आ रहे थे। उनके घोड़ों पर बड़ी-बड़ी गठरियां लदी हुई थीं। थोड़ी ही देर में वे आंखों से ओझल हो गए। शाम होने पर उसने दोनों गदहों पर लकड़ियां लादीं, और अपने गांव चल दिया।

रात में बहुत देर तक उसे नींद नहीं आई। वह सोचता रहा, ये डाकू कहां से आए और कहां गए। लगता है, रात में चोरी करते हैं, और कहीं जंगल में छिप जाते हैं, फिर प्रात:काल अपने अड्डे पर आ जाते हैं। दूसरे दिन वह फिर उन पहाड़ों की तरफ लकड़ी काटने गया, पर उस दिन कोई नहीं आया। आठवें दिन उसने फिर देखा, उसी तरह आठ-दस घुड़सवार पहाड़ों की तरफ चले गए।

लकड़हारे ने यह अन्दाज लगा लिया कि वे हर आठ दिन पर कहीं से आते हैं। उसने सोचा कि बीच के इन दिनों में वह पता लगाएगा कि वे इन पहाड़ों में कहां पर जाते हैं? उसने सोचा, जरूर कोई ऐसी जगह होगी, जहां वे अपना लूटा माल रखते हैं।

दूसरे दिन समय देखकर वह पहाड़ों की तरफ गया। थोड़ी लकड़ी काटी, फिर खोज करने लगा। पेड़ों पर चढ़कर उसने देखा, थोड़ी दूर पर घने पेड़ों के बीच एक खण्डहर सी इमारत थी। वह उतरकर उसी तरफ चल दिया, और जल्दी ही उस खण्डहर के पास पहुंच गया। उसने खण्डहर के चारों तरफ घूमकर देखा, पर कहीं कोई रास्ता नहीं दिखाई दिया।

पास ही एक टूटा मंदिर था। उसके भीतर जाने पर उसे एक जगह कुछ टूटी सीढ़ियां दिखाई दीं। उसने पास जाकर देखा, तो वे सीढियां किसी सुरंग सी लगी दिखीं। उसने सीढ़ियों से उतरना शुरू किया। कुछ नीचे जाने पर उसे हल्की रोशनी दिखाई दी, तो वह आगे बढ़ गया। भीतर जाने पर उसे अच्छा खासा भवन दिखा, जो भूतल में बना था। वहां अच्छे खासे कमरे थे। उसने किवाड़ों की दरार से झांककर देखा जहां तमाम सामान भरा था। फिर आगे बढ़ा तो एक बड़ा लकड़ी का बक्सा दिखा, जो



चांदी के सिक्कों से भरा था। उसने थोड़े सिक्के अपनी पुरानी लुंगी में बांध लिया, और आगे बढ़ने पर उसे सीढ़ियां दिखी, जो एक तालाब की बारादरी में पहुंचती थी। वहां एक पानी की बावड़ी थी। वह उसी रास्ते बाहर हो गया।

घर आकर उसने अपनी पत्नी को कुछ नहीं बताया। दूसरे दिन तबियत खराब होने का बहाना कर वह बगल के कस्बे में गया। फिर वहां से पुलिस के बड़े महकमें में गया। वहां पुलिस के बड़े साहब से मिला, और उसने सारी बात बताई, जो देखी थी। चांदी के सिक्के भी उन्हें दिखाए और दिए।

उसको लेकर पुलिस फोर्स, तुरन्त वहां गई। उन दिनों डाकुओं का बहुत आतंक फैला हुआ था। पुलिस बहुत परेशान थी।

लकड़हारे ने रास्ता दिखा दिया, तथा कैसे जाना होगा, वह सब बता दिया। पुलिस ने उस स्थान को घेर लिया। उस दिन सभी डाकू वहां सोए हुए थे, सभी पकड़े गए। पुलिस ने पूरे धन पर कब्जा कर लिया। डाकुओं को जेल में डाल दिया गया।

सरकार की तरफ से लकड़हारे को इनाम में बहुत सा धन मिला, जिसे लेकर वह दूसरे शहर चला गया। वहां रहने के लिए उसने एक छोटा सा मकान खरीदा और अपने बीबी बच्चों के साथ रहने लगा। पास ही के जंगल में उसने लकड़ी के व्यापार का ठेका लिया, और जल्दी ही धनवान हो गया। बाद में उसने फर्नीचर बनाने का कारखाना खोल लिया।

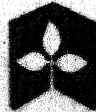
इस प्रकार ईमानदारी से सरकार की मदद करने से उसे धन तथा सम्मान दोनों ही प्राप्त हुए और सुख का जीवन जीने की व्यवस्था हो गई।

बच्चों! हमेशा बुराई को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए, जिससे एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो।



श्रीमती प्रभा नारायण





साक्षी प्रकाशन

एस-16, नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032 ● फोन- 2284833